मानव विज्ञान परिपेक्ष्य - संस्कृति एवं जनजाति

मानवविज्ञान वह विज्ञान है जो आदिकालिन मानव की शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और उनके विकास संबंधी विशेषताओं का अध्ययन कराता है। मानव विज्ञान को मानव शास्त्र भी कहा जाता है। मानवशास्त्र को समझने के लिए हमें समाजशास्त्र को जाननेकी जरूरी होता है क्योंकी समाजशास्त्र और मानवशास्त्रका एक दूसरे के बीच गहरा संबंध होता है। हर्सकोविट्ज ने कहा है कि मानवशास्त्र मनुष्य एवं कृतियों का अध्ययन है। (Anthropology is a study of man and his works) मनुष्यों की कृतियों में भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार की संस्कृति आती है। मानवशास्त्र में ~~मनुष्यों~~ मानव का विकास एवं मानव द्वारा निर्मित संस्कृति, सभ्यता आदि का अध्ययन किया जाता है। ~~समाजशास्त्र में भी~~ (समाजशास्त्र में भी मानव-समाज और उसकी संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।) इन दोनों विषय में ही मानव समूहों के अन्तः संबंधों का अध्ययन किया जाता है, जैसाकि मानवशास्त्री हॉबेल ने भी कहा है।

मानवशास्त्री एवं समाजशास्त्री अपने अध्ययन में एक-दूसरे विषय की अवधारणाओं एवं सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। समाजिक मानवशास्त्री मुख्य रूप से छोटे-छोटे समुदाय का अध्ययन करते हैं जैसे - आदिवासी समुदाय में पायी जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है। इन अध्ययनों से जिन अवधारणाओं का विकास हुआ है, उनका उपयोग समाजशास्त्रियों ने भी आधुनिक और जटिल समाजों के अध्ययन में किया है। (पद्धति के आधार पर भी समाजिक मानवशास्त्र और समाजशास्त्र में कुछ समानता है।)

सामाजिक या सांस्कृतिक मानवशास्त्र जो कि मानवशास्त्र की एक शाखा है, के कुछ विचारकों जैसे - L.H. मार्गन, रेडफील्ड, रेडक्लिफ, ब्राउन आदि के योगदान समाजशास्त्र के लिए भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध हुए हैं। भारत में एम. एन. श्रीवास, एस सी दूबे, एन के बोस, आन्द्रे बेते

प्रभृति मानवशास्त्रियों के विभिन्न अध्ययन दोनों ही विषय में एक समान महत्वपूर्ण हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सामाजिक या सांस्कृतिक मानवशास्त्र और समाजशास्त्र के बीच समानता ज्यादा और अंतर कम है। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने Social Anthropology को Comparative sociology भी कहा है।

मानवशास्त्र के अन्तर्गत मुख्यरूप से छोटी इकाई वाले समुदायों का अध्ययन किया गया है जबकि समाजशास्त्र के अन्तर्गत आधुनिक और जटिल समाजों पर अधिक बल दिया गया है। इसके बावजूद, यहाँ यह स्पष्ट करना उचित होगा कि जटिल समाजों पर भी मानवशास्त्रीय अध्ययन हुए हैं लेकिन तुलना करने पर यह प्रतीत होता है कि मानवशास्त्रियों के बीच आदिवासियों आदि का अध्ययन अधिक प्रचलित रहा है।

~~आदिवासी समाज में धर्म, जादू, कला, विवाह परिवार, नातेदारी, व्यवस्था आदि मानवशास्त्रियों के विषय केन्द्रित रहे हैं।~~

इन दोनों विषयों के बीच सबसे बड़ा अन्तर परिप्रेक्ष्य (Perspective) का है। मानवशास्त्र मुख्य रूप से अपने अध्ययन के विषय को संस्कृति के संदर्भ में देखता है जबकि। ~~संस्कृति के वास्तविक सम्प्रत्यय को समझने के लिए हमें कुछ अपने ढंग से सोचना समझना चाहिए।~~ यदि हम मानव विकास की कहानी पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि अपने आदिकाल में मानव पशुवत जीवन जीता था। धीरे-धीरे उसने अपने शरीर, मस्तिष्क और बुद्धि के प्रयोग से अपने जीवन को सरल एवं सुखमय बनाने हेतु अनेक वस्तुओं का निर्माण किया और अपने रहन-सहन एवं खान-पान की विधियाँ विकसित कि और विचारों के आदान-प्रदान हेतु भाषा का विकास किया। क्योंकि उस समय आवागमन हेतु न मार्ग थे और न साधन इसलिए संसार के

भिन्न-भिन्न भागों में बसे मनुष्यों ने कुछ-कुछ अपने-अपने ढंग की वस्तुओं का निर्माण किया और अपने-अपने रहन-सहन एवं खान-पान की विधियाँ विकसित की और अपनी-अपनी भाषाओं का विकास किया। कालान्तर में उनमें व्यवहार प्रतिमान, रीति-रिवाज, कला-कौशल, संगीत नृत्य, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, आदर्श-विश्वास और मूल्य विकसित हुए। विकास के इस क्रम में एक स्थिति ऐसी आई जब उससे उन्हें संतुष्टि मिलने लगी। परिणामतः वे उनके जीवन के अंग बन गए। इतिहास कार इस सबको मानव की सभ्यता और समाजशास्त्री उसी संस्कृति कहते हैं। विकास के इस क्रम में हमने आवागमन के मार्ग बनाए और साधनों का विकास किया और हम एक-दूसरे के संपर्क में आए और हमने एक-दूसरे की सभ्यता एवं संस्कृति को सीखना प्रारंभ किया।

जनजातियों को आदिम समाज, आदिवासी, वन्य जाति के नामों से जाना जाता है। आज भी अनेक जनजातियाँ आदिम स्तर पर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जबकि दुनिया के अधिकांश देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। जनजाति पहाड़ों पर, नदियों के किनारे, वनों में प्रायः निवास करते हैं। जनजाति वह क्षेत्रीय मानव समूह है जो भू-भाग, भाषा, सामाजिक नियम और आर्थिक-कार्य आदि विषयों में एक सामान्यता के सूत्र में बँधा रहता है। डॉ. रिवर्स के ~~जनजाति की परिभाषा~~ के अनुसार "जनजाति एक ऐसे सरल प्रकार का सामाजिक समूह है जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं तथा ~~कुछ आर्थिक~~ सामान्य उद्देश्यों के लिए ~~कार्य करते~~ सम्मिलित रूप से कार्य करते हैं। गिलिन एवं गिलिन लिखते हैं – "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक समान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो उसे जनजाति कहते हैं।"

उपयुक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि -

जनजाति अनेक परिवारों या परिवार के समूह का संकलन होता है। प्रत्येक जनजाति की अपनी एक सामान्य भाषा होती है। जिससे विचारों का आदान-प्रदान और वास्तविक एकता एवं सामाजिक संगठन का विकास सरलता से हो सके। जनजाति की एक और विशेषता यह है कि एक निश्चित भू-भाग पर रहती है। सामान्य भू-भाग के आधार पर सामुदायिक भावना भी दृढ़ हो जाती है। जनजाति प्रायः एक अन्तर्विवाही समूह होता है। प्रारम्भ में सब जनजातियाँ अपनी ही जनजाति में विवाह करती थी। परन्तु आधुनिक युग में यातायात के साधनों की उन्नति के साथ एवं जनजाति का पड़ोसी जनजाति से संबंध बढ़ गया जिसके फलस्वरूप अनेक जनजातियाँ अपने अपने जनजातिय समूह से बाहर भी शादी कर लेती हैं। जनजाति के सदस्यों में पारस्परिक आदान-प्रदान के कुछ सामान्य नियम और निषेध होते हैं जिनको प्रत्येक सदस्यों को मानना पड़ता है और जिनके आधार पर इनके व्यवहार नियंत्रित होते हैं। जनजाति की सामान्य संस्कृति होती है और बाहर के समूहों के विरुद्ध इनके सदस्यों में एकता की भावना होता है। प्रत्येक जनजाति की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति होती है।